

प्र शा स्ति -प त्र

ग्रचभार ती यइतिहासखं सं सूकती केमर्म इविद्वान् स्थविगिज्यी सद्गाट  
खर वे लपर कडभाषामें प्रश्मकृत्तिकेणे तावे षी विद्वान् अदरी णी श्री

जी ० बा ह्यप्प ।

केलि एसद्गाटखर वे लकी भावस्मृ ती में प्रश्मवार आयो फिखर वे ल-  
मा हा ते त्सा वा

केशु बआसर पर उकी विखात्कृत्तिसद्गाटखर वे लेकलि एसबाहु माफ  
सम्माफिकियाफाहा है स्थाउकी स्मृ त्तिके कृषभदे वाप्रतिष्ठा फईदिल्ली  
द्वार । प्रवर्ति एफला खरुफ्याँ की रा शिका प्रश्मपु र स्कार एां

'इति हा सार त् ल '

कमाफदअनं कर षडर्मा हु रागी माफी यश्री फाफी वल्लभटफायक  
सु खामं ग्री उडी साभाफेकर कमलों द्वार । सादर समर्पिकियागया

स्वा रूप च न्द जै न

अष्टा ष

ह द यार । ज जै न

मा हा सा चि वा

ऋ षा भ दे वा प्र ति ष्ठा न , न ई दि ल्लाी

दि नां क १८ जन वारी १९९९

सामार । हे स्थला स्नू चना भवान , भु वाने श्वर (उडी सा )